ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वेषामिज्जनिता ब्रह्मणामसि। ऋग्वेद 2/23/2
हे प्रभो ! सम्पूर्ण विद्याओं के आदि मूल आप ही हैं।
O Lord ! you are the fountain head of all knowledge.

वर्ष 36, अंक 44 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 30 सितम्बर, 2013 से रविवार 6 अक्तूबर, 2013 तक
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

राहत सामग्री वितरण का 5वां दौर : उत्तराखण्ड आपदा राहत कार्यों में आर्यसमाज की अग्रणी भूमिका

पीड़ितों की हर जरुरतों की पूरा करने का प्रयास कर रहा है आर्यसमाज

आर्यसमाज द्वारा दिए गए सोलर लालटेन से जगमगता है आपदा प्रभावित क्षेत्र

गरीब परिवारों की 30 कन्याओं के विवाह में सहयोग करेगा आर्यसमाज – विनय आर्य

उत्तराखण्ड में आई भयंकर प्राकृतिक आपदा के लगभग 3 मास बाद भी प्रभावित क्षेत्रों में आर्यसमाज द्वारा राहत कार्य किए जा रहे हैं। गत दिनों सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में आर्यसमाज राहत सामग्री से भरे ट्रकों को प्रभावित क्षेत्रों में भेजा गया। इस बार सेवा समिति के सदस्यों के साथ-साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी के सभा के विभिन्न अधिकारियों के साथ उत्तराखण्ड पहुंचे। उन्होंने प्रभावित गांवों में पहुंचकर राहत कार्यों को जायजा लिया तथा बैठक करके ग्रामीणों से चर्चा करने के बाद सबसे प्रभावित व्यक्तियों तक आर्यसमाज की राहत सामग्री पहुंचाने के लिए के उद्देश्य से पर्चियों का वितरण किया। उन्होंने इस अवसर पर ग्रामीण महिलाओं से भी चर्चा की तथा गरीब

– शेष पृष्ठ 5 एवं 7 पर

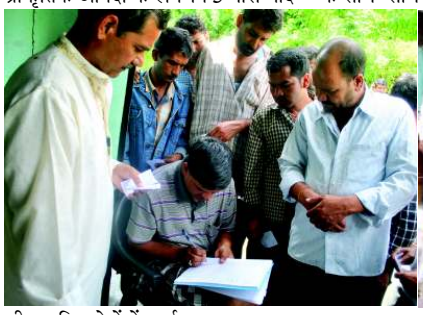

प्रभावित क्षेत्रों के निराश्रित बच्चों के रहने एवं पढ़ने के लिए भवन निर्माण का कार्य अगले मास होगा आरम्भ : समस्त आर्यजगत से सहयोग की अपील

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्षों के प्रयास से

दिल्ली हाई कोर्ट ने लगाई आर्यसमाज के नाम पर चल रही नकली संस्थाओं में विवाहों पर रोक

दिल्ली उच्च न्यायालय ने आज यमुना बाजार आदि स्थानों पर स्थित नकली आर्यसमाजों में अवैध रुप से हो रहे विवाहों पर सर्टिफिकेट जारी करने पर रोक लगा दी है। जस्टिस हीमा कोहली जी ने दिल्ली हाई कोर्ट में आज केस नम्बर W.P.(CRL) 1583/2010 में सुनवाई के दौरान दिल्ली की आर्यसमाजों की शिरोमणी संस्था "दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली" के प्रार्थना पत्र पर विचार करते हुए भारत के सविधान के अधिनियम "आर्य विवाह विधि मान्य अधिनियम 1937" का हवाला देते हुए उक्त आदेश पारित किया, जिसके आधार पर अब नकली आर्यसमाजें विवाह नहीं करा सकेगी तथा इससे युवाओं की भावनाओं का लाभ उठाकर कुछ लोग जो शोषण किया करते थे, उस पर रोक लगेगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री विनय आर्य ने कहा कि दिल्ली में जिन आर्यसमाजों के मन्दिरों में विधिपूर्वक संविधान अनुसार विवाह कराने की व्यवस्था है तथा समस्त कार्यवाही पूरा करने के पश्चात् प्रमाण-पत्र जारी किया जाता है उनकी सूची सभा की वेबसाइट www.thearyasamaj.org पर प्रदर्शित की गई है। उन्होंने आम जनता से आग्रह किया कि इस बारे में सभी को जागरुक करें। आदेश की पूर्ण प्रति जल्दी ही सभा की वेबसाइट पर भी देखी जा सकेगी।

ज्ञातव्य हो कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों का प्रतिनिधित्व करने वाली शिरोमणि नियन्त्रक संस्था है। दिल्ली की समस्त आर्यसमाजें इससे सम्बन्धित होकर कार्य करती हैं। लम्बे समय से कुछ लोग आर्यसमाज के नाम पर विवाह कराने का अवैध कार्य कर रहे थे। जिस पर रोक लगाने के लिए सभा काफी समय से प्रयासरत थी। नकली आर्यसमाजें गलत तरीके और बिना कागजी कार्यवाही पूरी किये केवल धन के लालच से विवाह कराने का कार्य कर रही थी जिससे सामाजिक कार्य करने वाली विश्वविख्यात संस्था आर्यसमाज की छवि खराब होती थी। यह रोक अगले आदेश तक जारी रहेगी तथा अभी न्यायालय में सुनवाई आगे चलेगी।

वेद-स्वाध्याय

किसके राज्य में प्रजा सुखी

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

यस्येक्ष्वाकुरुप व्रते रेवान्मराय्येधते। दिवीव पञ्च कृष्टयः।।। ऋग्वेद 10/60/4

अर्थ—**(यस्य व्रते)** जिस राजा के शासन में **(इक्ष्वाकुः)** गन्ने के समान मधुरभाषी ब्राह्मण [शिक्षा मन्त्री] **(रेवान्)** वैश्य [अर्थमन्त्री] **(मरायी)** क्षत्रिय [सेनापति] **(उप एधते)** समृद्धि को प्राप्त होते हैं अथवा अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हैं **(तस्य)** उस राजा के राज्य में **(पञ्चकृष्टयः)** पाँच प्रकार के जन-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, निषाद **(दिवि इव)** सूर्य की किरणों के समान **(एधते)** वृद्धि, समृद्धि को प्राप्त होते हैं।

इस मन्त्र का देवता असमाति राजा है जिसके समान ज्ञान-बल में कोई दूसरा न हो उसे असमाति या अद्वितीय कहते हैं।

ब्राह्मं प्राप्तेन संस्कारं क्षत्रियेण यथाविधि। सर्वस्यास्य यथा न्यायं कर्त्तव्यं परिरक्षणम्॥ मनु० ७.२॥

ब्राह्मण के समान संस्कार वाले अर्थात् विद्वान् क्षत्रिय को योग्य है कि समस्त प्रजा की न्याय से यथावत् रक्षा करे। ब्रह्मतेज और क्षात्र धर्म से सुशोभित राजा के शासन में ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य, शूद्र, निषाद ये **पञ्चकृष्टयः** पाँच प्रकार की प्रजा **दिवीव एधते** जैसे सूर्य के प्रकाश में पेड़-पौधे, अन्नादि की वृद्धि होती है, वैसे ही इनकी वृद्धि हो सर्वत्र सुख का साम्राज्य स्थापित हो जाता है। प्रजा की सुव्यवस्था हेतु राजा को शिक्षा, सम्पत्ति, सुरक्षा के लिये सुयोग्य मन्त्रियों की नियुक्ति करनी चाहिये। जब अकेले व्यक्ति के लिये सुगम कार्य करना भी कठिन हो जाता है तो फिर राज्य का सुप्रबन्ध अकेला राजा कैसे कर सकता है? वैसे भी एक व्यक्ति को सर्वोपरि मान उसी की बुद्धि के अनुसार कार्य करना राष्ट्र को विपत्ति के गड्ढे में धकेल देने जैसा ही है। इसलिये अपने देश में उत्पन्न हुये, वेदादि शास्त्रों को जानने हारे, शूरवीर, कुलीन और अपने कार्य में कुशल, परीक्षित सात या आठ सचिव-मन्त्री राजा नियुक्त करे।

शिक्षा, सम्पत्ति, सुरक्षा ये तीन महत्त्वपूर्ण विभाग हैं। जिनकी व्यवस्था के लिये राजा शिक्षामन्त्री, वित्तमन्त्री और रक्षामन्त्री की नियुक्ति कर उन्हें इन कार्यों का दायित्व सौंप दे।

१. इक्ष्वाकु शिक्षामन्त्री — शिक्षामन्त्री की पहली योग्यता इक्ष्वाकु अर्थात् गन्ने के समान मधुर व्यवहार करना कही है। विद्याध्ययन करने-कराने वाले ब्राह्मण और अध्यापक लोग प्रायः अल्पभाषी सुकोमल स्वभाव, तपस्वी और संयमी स्वभाव वाले होते हैं। इस वर्ग को मधुर व्यवहार से ही अपने अनुकूल किया जा सकता है। योग्य गुरुजनों का सम्मान, अयोग्यों का निष्कासन, उन्हें निर्भय होकर पढ़ने-पढ़ाने की व्यवस्था, योगक्षेम-भोजन वस्त्रादि का दान एवं ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि के लिये प्रोत्साहित करते रहना शिक्षामन्त्री का कर्त्तव्य है। योग्य गुरुओं, आचार्यों और उपाध्यायों द्वारा ही राष्ट्र के होनहार बच्चों का निर्माण होता है। जिस राष्ट्र में चरित्र, उत्तम व्यवहार एवं रोजगारोन्मुख शिक्षा दी जाती है वहाँ सब प्रकार की समृद्धि और सुख-शान्ति का निवास रहता है। वहाँ के विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त स्नातक शरीर, बुद्धि और आत्मिक उन्नति को प्राप्त हो जिस भी कार्य को हाथ में लेंगे, उसे पूरा करके ही दम लेंगे, इसमें सन्देह नहीं। शिक्षा ही राष्ट्र की पहली आवश्यकता है। शिक्षा मन्त्री समय-समय पर विद्वान् धार्मिक शिक्षाविदों से परामर्श कर उनसे मार्गदर्शन और समयानुसार शिक्षा में आवश्यक परिवर्तन करता रहे तो शिक्षा का उच्च स्तर बना रहेगा।

२. रेवान् वित्तमन्त्री — वित्तमन्त्री का प्रथम कर्तव्य यही है कि जिस वैश्य वर्ग से राष्ट्र को कर की प्राप्ति होती है उसके हितों की सुरक्षा और सभी सुविधायें दी जायें। राजाओं के भी राजा किसान एवं शारीरिकश्रम करने वाले तथा व्यापार, कला-कौशल से राष्ट्र की समृद्धि करने वाले व्यापारी वर्ग को आवागमन के मार्ग में सुरक्षा, कल-कारखानों के लिये कच्चे माल की आपूर्ति सुनिश्चित करना, खेती के लिये तालाब, नहर, कुएँ आदि का निर्माण, जंगली जानवरों से खेती की सुरक्षा और अतिवृष्टि, अकाल, ओलावृष्टि या अन्य कारणों से फसल नष्ट हो जाने पर कर में छूट तथा किसानों एवं मजदूरों को आर्थिक सहायता देने से उनका साहस बढ़ जायेगा और वे दोगुने उत्साह से धन कमाने का प्रयास करेंगे तथा समय पर राजा को निश्चित कर भी देंगे। जैसे मधुमक्खियाँ फूलों से थोड़ा-थोड़ा मधु सञ्चित करती हैं वैसे ही राजा एवं वित्तमन्त्री भी इतना कर निर्धारित करे जिसे सब लोग सरलता से देने में तत्पर रहें, आनाकानी न करें। यहाँ ध्यान रखने योग्य बात यह है कि जिस राजा का कोष धन-धान्य से भरा हुआ है, वही राजा आपत्ति के समय प्रजा की आर्थिक सहायता कर सकेगा और राज्य कर्मचारी तथा सेना एवं शस्त्रास्त्रों का संग्रह कर राष्ट्र की रक्षा में समर्थ होगा इसलिये राज्यकोष की वृद्धि समस्त उचित उपायों से करती रहनी चाहिये।

३. मरायी रक्षामन्त्री [सेनापति] **शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्रचर्चा प्रवर्तते** शस्त्रों से सुरक्षित राष्ट्र में ही कला कौशल, ज्ञान-विज्ञान और शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना सम्भव है। इसलिये योग्य व्यक्ति को सेनापति होना चाहिये जो-

व्यूहयन्त्रा युधानां च तत्त्वज्ञो विक्रमान्वितः। वर्षशीतोष्ण वातानां सहिष्णुः पररन्ध्रवित्॥

(महा०शा० २८५.३२)

व्यूहरचना [मोर्चाबन्दी], यन्त्रों के प्रयोग एवं नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों को चलाने की कला में निपुण, पराक्रमी, सर्दी, गर्मी, आंधी, वर्षा के कष्ट को धैर्य से सहने वाला और शत्रु पक्ष के छिद्र अर्थात् कब उस पर प्रहार करना उचित है, इस बात को जानने में कुशल है, उसे सेना-सञ्चालन का दायित्व देना चाहिये। जिसका व्यवहार अपने सैनिकों के साथ मित्रवत् है और जो उनके सुख-दुःख में सहभागी होता है, उसका साथ सैनिक विषम परिस्थिति में भी नहीं छोड़ते। इन स्थानों पर राजा सुयोग्य एवं विश्वस्त मन्त्रियों की नियुक्ति करे परन्तु उन्हीं पर सब कार्य भार देना उचित नहीं है। इसलिये राजा को चाहिये कि वह कभी-कभी इन विभागों की स्वयं तथा गुप्तचरों से छानबीन करता रहे तभी उसका राज्य और प्रजा सुखी रहेगी। - *क्रमशः*

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"
"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची

गतांक से आगे -

आर्यसमाज शाहबाद मोहम्मदपुर दिल्ली द्वारा एकत्र राशि

650	सर्वश्री मुकेश कुमार	2100
651	श्रीमती लाडोदेवी	1100
652	श्रीमती निमला देवी	500
653	लोकेश आर्य	1100
654	गंगा शरण आर्य	1100
655	नवीन गौड़	2100
656	सत्यदेव सोलंकी	1100
666	धर्मपाल सैनी	500
667	श्रीमती फूलवती देवी	500
668	ईश्वर सैनी	500
669	राजीव सोलंकी	1100
670	चरण सिंह (शाखाध्यक्ष)	1100
671	श्रीमती राजवती पांचाल	1100
672	पदम सिंह	201
673	दिनेश सोलंकी	1100
674	डॉ. रमेश काकरान	1100
675	राजवीर सोलंकी	1100
676	श्रीमती कमला शर्मा	1100
677	ओमदत्त पांचाल	100
678	सुशील कुमार पांचाल	1100
679	अभिषेक सुपुत्र सोनी पांचाल	501
680	प्रवीण लाम्बा	500
681	राजेश लाम्बा	500
682	जयदेव सोलंकी	500
683	श्रीचन्द्र सोलंकी	500
684	जितेन्द्र कुमार सोलंकी	1100

– क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। – *महामन्त्री*

पीड़ित निराश्रित बच्चों हेतु बनने वाले विद्यालय एवं छात्रावास के लिए बढ़-चढ़कर सहयोग करें

दानी सज्जन अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' - **खाता सं. 09481000000276**
पंजाब एंड सिंध बैंक, IFSC - PSIB 0020948 MICR - 110023121

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' - **खाता सं. 1098101000777**
केनरा बैंक, IFSC - CNRB 0001098 MICR - 110015025

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010008984897
एक्सिस बैंक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड' - **खाता सं. 0649201001 2620**
ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, देहरादून, IFSC - ORBC 0100 649

विशेष : जो सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं वे अपनी राशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम सभा के उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9540040339 पर श्री विजय आर्य को सूचित** करके **aryasabha@yahoo.com** तथा **dapsvijayarya@gmail.com** पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के खाते में राशि जमा कराने वाले सज्जन कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9760195053 पर श्री पृथ्वीराज आर्य** को सूचित करें ताकि रसीद जारी की जा सके।

– *विनय आर्य, महामन्त्री*

पितर, श्राद्ध और विधि

- डॉ. कविता वाचक्वी

'श्राद्ध' शब्द बना है 'श्रद्धा' से। श्रद्धा शब्द की व्युत्पत्ति 'श्रत्' या 'श्रद्' शब्द से 'अङ्' प्रत्यय की युक्ति होने पर होती है, जिसका अर्थ है- आस्तिक बुद्धि। 'सत्य धीयते यस्याम्' अर्थात् जिसमें सत्य प्रतिष्ठित है।

छान्दोग्योपनिषद् 7/19 व 20 में श्राद्ध की दो प्रमुख विशेषताएँ बताई गई हैं - मनुष्य के हृदय में निष्ठा आस्तिक बुद्धि जागृत कराना व मनन कराना।

मनुष्य समाज की समस्या यह है कि वह दिनों-दिन विचार और बुद्धि के खेल खेलने में तो निष्णात होता जा रहा है, किन्तु श्रद्धा का अभाव उसके जीवन को दु:ख और पीड़ा से भरने का बड़ा कारक है। विचार के बिना श्रद्धा पंगु है व श्रद्धा तथा भावना के बिना विचार । वह अंध-श्रद्धा हो जाती है क्योंकि विवेक के अभाव में यही पता नहीं कि श्रद्धा किस पर व क्यों लानी है या कि उसका अभिप्राय क्या है। इसीलिए ध्यान देने की आवश्यकता है कि मूलत: श्रद्धा का शाब्दिक अर्थ हृदय में निष्ठा व आस्तिक बुद्धि है..... बुद्धि के साथ श्रद्धा।

यह तो रही 'श्राद्ध' के अर्थ की बात। पितरों से जोड़कर इस शब्द की बात करें तो उनके प्रति श्रद्धा, कुल-परिवार व अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धा, अपनी जातीय -परम्परा के प्रति श्रद्धा, माता-पिता-आचार्यों के प्रति श्रद्धा की भावना से प्रेरित होकर किए जाने वाले कार्यों को 'श्राद्ध' कहा जाता है। यदि हमने अपने घर-परिवार व समाज के जीवित पितरों व माता-पिता के शारीरिक -मानसिक-आत्मिक सुख की भावना से कुछ नहीं किया तो मृतक पितरों के नाम पर भोजन करवाने मात्र से हमारे पितरों की आत्मा शान्ति नहीं पाएगी। न ही पितर केवल भोजन के भूखे होते हैं। वे अपने कुल व सन्तानों में वे मूलभूत आदर्श देखने में अधिक सुख पाते हैं जिसकी कामना कोई भी अपनी सन्तान से करता है । इसलिए यदि हम में वे गुण नहीं हैं व हम अपने जीवित माता-पिता या बुजुर्गों को सुख नहीं दे सकते तो निश्चय जानिए कि तब श्राद्ध के नाम किया जाने वाला सारा कर्मकाण्ड तमाशा-मात्र है।

संस्कृत न जानने वालों को बता दूँ कि 'पितर' शब्द संस्कृत के 'पितृ' से बना है जो पिता का वाचक है, किन्तु माता व पिता (पेरेंट्स) के लिए संस्कृत में 'पितरौ' शब्द है। इसी से हिन्दी में 'पिता' व जर्मन में (Vater) (जर्मन में 'ट' का उच्चारण 'फ' होने से उच्चारण है 'फाटर') शब्द बना है व उसी से अंग्रेजी में 'फादर' शब्द बना। संस्कृत में 'पितरौ' क्योंकि माता व पिता (अर्थात् 'पेरेंट्स') का वाचक है तो जर्मनी में इसीलिए 'पितर' शब्द के लिए 'Manes' (उच्चारण कुछ-कुछ मानस शब्द जैसा) शब्द कहा जाता है जबकि इसी से अंग्रेजी में शब्द बना Man में (उच्चारण मैनेस्) । 'माँ' से इसकी उच्चारण व वर्तनी साम्यता देखी-समझी जा सकती है।

समस्या यह है कि श्राद्ध को लोग कर्मकाण्ड समझते व करते हैं और वैसा कर वे अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। जबकि मृतक पितरों के नाम पर पूजा करवा कर यह समझना कि किसी को खाना खिलाने से उन तक पहुँच जाएगा, यह बड़ी भूल है। जीवित पितरों को सुख नहीं दो व मृतक पितरों के नाम पर कर्मकाण्ड करना ही गड़बड़ है। कर्मकाण्ड श्राद्ध नहीं है। कोई भी कर्मकाण्ड मात्र प्रतीक-भर है मूल जीवन में अपनाने योग्य किसी भी संस्कार का। यदि जीवन में उस संस्कार को आचरण में नहीं लाए तो कर्मकाण्ड केवल तमाशा है। घरों परिवारों में बुजुर्ग और बड़े-बूढ़े दु:ख पाते रहें, उनके प्रति श्रद्धा का वातवरण घर में लेशमात्र भी न हो और हम मृतक पितरों को जल चढ़ाते रहें, तर्पण करते रहें या उनके नाम पर श्राद्ध का आयोजन कर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझते रहें, इस से बड़ा क्रूर व हास्यास्पद पाखण्ड और क्या होगा।

वस्तुत: मूल अर्थों में श्राद्ध, श्रावणी उपाकर्म के पश्चात् अपने-अपने कार्यक्षेत्र में लौटते समय वरिष्ठों आदि के अभिनन्दन सत्कार के लिए होने वाले आयोजन के निमित्त समाज द्वारा प्रचलित परम्परा थी, जिसका मूल अर्थ व भावना लुप्त होकर यह केवल प्रदर्शन-मात्र रह गई है। मूल अर्थों में यह 'पितृयज्ञ' का वाचक है व उसी भावना से इसका विनियोग समाज ने किया था, इसीलिए इसे पितृपक्ष भी कहा जाता है। किन्तु अब इसे नेष्ट, कणातें, अशुभ, नकारात्मक दिन, शुभकार्य प्रारम्भ करने के लिए अपशकुन आदि मान लिया गया है। हमारे पूर्वजों से जुड़ा कोई दिन अशुभ कैसे हो सकता है, नकारात्मक प्रभाव कैसे दे सकता है, अपशकुन कैसे कर सकता है? क्या हमारे पूर्वज हमारे लिए अनिष्ट चाह सकते हैं? क्या किसी के भी पूर्वज उनके लिए अशुभकारी हो सकते हैं? माता-पिता के अतिरिक्त संसार में कोई भी अन्य सम्बन्ध केवल और केवल हितकारी व निस्स्वार्थ नहीं होता। सन्तान भी माता-पिता का वैसा हित कदापि नहीं चाह सकती जैसा माता-पिता अपनी संतान के लिए स्वयं हानि, दु:ख व निस्स्वार्थ बलिदान कर लेते हैं, उसे अपने से आगे बढ़ाना चाहते हैं, उसे अपने से अधिक पाता हुआ देखना चाहते हैं और ऐसा होता देख ईर्ष्या नहीं अपितु सुख पाते हैं। ऐसे में 'पितृपक्ष' (पितृयज्ञ की विशेष अवधि) को नकारात्मक प्रभाव देने वाला मानना कितना अनुचित व अतार्किक है।

आज समाज में सबसे निर्बल व तिरस्कृत कोई हैं, तो वे हैं हमारे बुजुर्ग। वृद्धाश्रमों की बढ़ती कतारों वाला समाज श्राद्ध के नाम पर कर्मकाण्ड कर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ ले तो यह भीषण विडम्बना ही है। यदि हम घर परिवारों में उन्हें उचित आदर-सत्कार, मान-सम्मान व स्नेह के दो बोल भी नहीं दे सकते तो श्राद्ध के नाम पर किया गया हमारा सब कुछ केवल तमाशा व ढोंग है। यों भी वह अतार्किक व श्राद्ध का गलत अभिप्राय लगा कर किया जाने वाला कार्य तो है ही। जब तक इसका सही अर्थ समझ कर इसे सही ढंग से नहीं किया जाएगा तब तक यह करने वाले को कोई फल नहीं दे सकता (यदि आप किसी फल की आशा में इसे करते हैं तो)। वैसे प्रत्येक कर्म अपना फल तो देता ही है और उसे अच्छा किया जाए तो अच्छा फल भी मिलता ही है।

मृतकों तक कोई सन्देश या किसी का खाया भोजन नहीं पहुँचता और न ही आपके-हमारे दिवंगत पूर्वज मात्र खाने-पीने से संतुष्ट और सुखी हो जाने वाले हैं। भूख देह को लगती है, आत्मा को यह आहार नहीं चाहिए। मृतक पूर्वजों को भोजन पहुँचाने (जिसकी उन्हें आवश्यकता ही नहीं) से अधिक बढ़कर आवश्यक है कि भूखों को भोजन मिले, अपने जीवित माता पिता व बुजुर्गों को आदर सम्मान से हमारे घरों में स्थान, प्रतिष्ठा व अपनापन मिले, उन्हें कभी कोई दुख सन्ताप हमारे कारण न हो। उनके आशीर्वाद के हम सदा भागी बनें और उनकी सेवा में सुख पाएँ। किसी दिन वृद्धाश्रम में जाकर उन सबको आदर सत्कार पूर्वक अपने हाथ से भोजन करवा उनके साथ समय बिताकर देखिए... कितने आशीष मिलेंगे। परिवार के वरिष्ठों व अपने माता-पिता आदि की सेवा सम्मान में जरा-सा जुटकर देखिए, कैसे घर पर सुख सौभाग्य बरसता है।

- शेष पृष्ठ 6 पर

मृतकों तक कोई सन्देश या किसी का खाया भोजन नहीं पहुँचता और न ही आपके-हमारे दिवंगत पूर्वज मात्र खाने- पीने से संतुष्ट और सुखी हो जाने वाले हैं। भूख देह को लगती है, आत्मा को यह आहार नहीं चाहिए। मृतक पूर्वजों को भोजन पहुँचाने (जिसकी उन्हें आवश्यकता ही नहीं) से अधिक बढ़कर आवश्यक है कि भूखों को भोजन मिले, अपने जीवित माता पिता व बुजुर्गों को आदर सम्मान से हमारे घरों में स्थान, प्रतिष्ठा व अपनापन मिले, उन्हें कभी कोई दुख सन्ताप हमारे कारण न हो। उनके आशीर्वाद के हम सदा भागी बनें और उनकी सेवा में सुख पाएँ। किसी दिन वृद्धाश्रम में जाकर उन सबको आदर सत्कार पूर्वक अपने हाथ से भोजन करवा उनके साथ समय बिताकर देखिए... कितने आशीष मिलेंगे। परिवार के वरिष्ठों व अपने माता-पिता आदि की सेवा सम्मान में जरा-सा जुटकर देखिए, कैसे घर पर सुख सौभाग्य बरसता है।

जीवित पितर, माता-पिता व अन्य सम्बन्धियों की श्रद्धापूर्वक सेवा करके किया श्राद्ध

समाज में पाखण्ड, अंधविश्वास व मृत पितरों के नाम पर श्राद्ध जैसी कुप्रथा फैली हुई हैं। आर्य समाज इसका खण्डन करता है तथा आर्य समाज अपने जीवित पितर, माता-पिता व अन्य सम्बन्धियों की श्रद्धापूर्वक सेवा व सम्मान करता है। 29 सितम्बर 2013 रविवार को प्रात: 10:30 बजे वृद्ध सम्मान दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम पिछले 4 वर्षों से लगातार होता चला आ रहा है। जिसमें समाज के सभी वर्गों से 70 वर्ष से अधिक आयु के सभी महानुभावों व नौजवानों को आर्य समाज में आमन्त्रित किया गया। नौजवानों ने सभी आदरणीय महानुभावों का आदर सत्कार किया और उन्हें उपहार स्वरूप एक तौलिया भेंट किया, उत्तम भोजन कराया गया। इस शुभ अवसर पर आचार्य इन्द्रदेव जी के प्रवचन हुए, जिसमें उन्होंने चार आश्रमों का वर्णन करते हुए कहा कि नौजवानों को अपने जीवित माता-पिता व अन्य सभी महानुभावों का आदर और सत्कार करना चाहिए यही सच्चा श्राद्ध है। इस अवसर पर इस क्षेत्र की निगम पार्षद श्रीमती राजकुमारी ढिल्लों ने सभी को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज का ये अति उत्तम समाज सुधार का कार्य है इसको बड़े स्तर पर पार्क में करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्होंने इसमें पूरा सहयोग करने का आश्वासन दिया। प्रधान श्रीमती राजेश्वरी आर्या ने सभी का धन्यवाद किया।- ***श्रीपाल आर्य, मन्त्री***

आर्यसमाज के गौरवपूर्ण अतीत को स्वर्णिम भविष्य में बदल दें

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का चिन्तन शिविर गाँधीधाम में सफलता पूर्वक सम्पन्न

युवाओं के संगठन से आर्यसमाज का होगा नवोदय
– विनय आर्य, उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा

गुजरात के आर्यसमाज के संगठन को विस्तारित एवं मजबूत करेंगे – सुरेश चन्द्र अग्रवाल, प्रधान, गुजरात सभा

दिनांक 20 से 22 सितम्बर 2013 तक आर्यसमाज गाँधीधाम के सभागार 'वैदिक संस्कार केन्द्र' में गुजरात के 60 आर्यसमाजों के पदाधिकारियों व अन्तरंग सदस्यों की चिंतन शिविर सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा प्रेरित गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज गाँधीधाम (कच्छ) के सहयोग से आयोजित इस शिविर में 125 प्रतिनिधि उपस्थित थे।

अजमेर से पधारे पंडित रामस्वरुपजी ने आर्यसमाज के नियमों की व्याख्या करते हुए कहा कि यह नियम मानवता के मंत्र समान है। जिस में सनातन वैदिक धर्म के सिद्धांत जीव, ईश्वर, प्रकृति, आर्यों के कर्त्तव्य, ईश्वर के गुण, धर्म की पहचान, आर्यसमाज की स्थापना के उद्देश्य का विस्तृत मार्गदर्शन है।

श्री विनय आर्यजी (महामंत्री-दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) ने कहा कि आर्यसमाज का अतीत बड़ा ही गौरवपूर्ण रहा है, हम सब साथ मिलकर स्वर्णिम भविष्य बनाने का प्रयत्न करें। आर्यसमाज के पास विचारों की ताकत है और तर्क से निर्णय किया जाता है। आर्यसमाज के साथ जुड़ने से किसी का भी नुकसान नहीं हुआ है। उन्होंने आधुनिक युग के साथ नवीनतम टैक्नोलोजी से आर्यसमाज को जोड़ने और युवाओं को कार्य करने का अवसर देने का आहवान किया।

ब्र० दिनेशजी (रोजड़) ने तीनों दिन यज्ञ करवाया और यज्ञ का महत्त्व, होनेवाले लाभ, कर्मफल सिद्धांत, ईश्वर का स्वरुप, सृष्टि की रचना जैसे विषयों पर मार्गदर्शन दिया।

संगठन विस्तृतिकरण, कार्यालय के आधुनिकीकरण, सेवाकार्यों का विस्तार, व्यक्तिगत जीवन में आध्यात्मिक उन्नति, वैदिक धर्म के सिद्धान्तों की जानकारी, आर्यसमाज के नियम उपनियमों की जानकारी श्री हसमुखभाई परमार (महामंत्री प्रान्तीय सभा गुजरात) ने दी। आर्यसमाज गाँधीधाम के महामंत्री श्री वाचोनिधि आचार्य ने आर्यसमाज के प्रबंधन विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। समग्र शिविर को प्रश्नोत्तरी से जोड़कर रोचक बनाया गया। तीनों दिन 10-10 शिविरार्थियों का समूह बनाकर चर्चा और रात्रि सत्र में उसका पठन व निष्कर्ष किया गया- और अपने अपने क्षेत्रों में सेवा प्रकल्पों बढ़ाने पर जोर दिया गया। गुजरात के 6 विभागों में आई.टी. सैल बनाये गये और हर विभाग में युवाओं को कार्य सौंपा गया। समापन पर शिविरार्थियों ने शिविर दौरान लिए संकल्पों को व्रत पत्रक में अंकित कर व्रतों का पालन करने का संकल्प किया। वैदिक प्रश्नोत्तरी में सभी ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

शिविर की सफलता के फलस्वरुप जो नयी उर्जा का संचार हुआ है उनको बनाये रखकर प्रान्तीय सभा के संगठन को सक्षम व मजबूत बनाने की बात शिविराध्यक्ष श्री सरेशचन्द्र अग्रवाल (प्रधान प्रान्तीय सभा, गुजरात) ने कही। शिविर के अंतिम दिन पधारे महानुभावों का शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया गया।

शिविर को सफल बनाने में श्री हसमुख भाई परमार और आर्यसमाज गाँधीधाम के पदाधिकारियों व ट्रस्टियों ने खूब मेहनत की। – ***वाचोनिधि आर्य, महामंत्री***

दीप प्रज्वलन करके कार्यक्रम का शुभारम्भ करते सर्वश्री वाचोनिधि आर्य, ब्र. दिनेश, स्वामी रामस्वरूप, गुजरात सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल एवं श्री हंसमुख भाई परमार जी। शिविर में भाग लेने के लिए गुजरात प्रान्त के समस्त भागों से पधारे आर्यसमाजों के अधिकारी एवं कार्यकर्ता

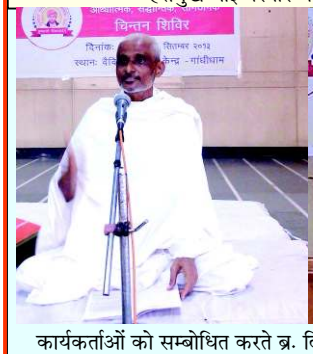

कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते ब्र. दिनेश जी, आचार्य रामस्वरूप जी, एवं सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य थे।

त्रिनगर में आर्यसमाज के नाम से सड़क का नामकरण : आर्यसमाज मार्ग नाम रखा गया

गत दिनों आर्यसमाज त्रिनगर लेखराम नगर के सामने वाली सड़क का नामकरण दिल्ली नगर निगम की ओर से आर्यसमाज मार्ग किया गया। नामकरण उ. दिल्ली नगर निगम के नेता सदन श्री महेन्द्र नागपाल ने किया। इस अवसर पर क्षेत्र की आर्यसमाजों के पदाधिकारी एवं सभा अधिकारी भी उपस्थित थे।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की विभिन्न शाखाओं बांसवाड़ा व भामल में भवन निर्माण का शिलान्यास एवं बामनिया में बन रहे महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. स्कूल का निरीक्षण

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की शाखा बांसवाड़ा में राजस्थान सरकार के जनजातीय विकास, पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास मन्त्री श्री महेन्द्रजीत सिंह मालवीय ने 50 लाख की लागत से आश्रम में कमरे बनवाने के लिए शिलान्यास किया जिसकी अध्यक्षता माता प्रेमलता जी ने की एवं श्रीमती रेशम मालवीया जिला प्रमुख बांसवाड़ा विशेष अतिथि के रुप में उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम में श्री श्रवण राय पुरोहित, श्री अनन्त गुप्ता, भाटला

आश्रम के अध्यक्ष श्री विश्वास सोनी अपनी पत्नी श्रीमती संगीता सोनी, कुशलगढ़ पंचायत सीमिति के प्रधान श्री हर्टिग खारिया एवं बांसवाड़ा के प्रधान श्री भेरुलाल चारकोटा थे। दिल्ली से सेवाश्रम के व॰ उपप्रधान श्री धर्मपाल गुप्ता, इंजीनियर श्री नरेन्द्र नारंग, सैनिक विहार के पुरोहित श्री रामनिवास जी, एवं उत्तर पूर्व के मन्त्री जोगिन्द्र खट्टर कार्यक्रम में

– शेष पृष्ठ 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यसमाज द्वारा स्वाबलम्बन हेतु गौदान

उत्तराखण्ड आपदा प्रभावित क्षेत्रों मे कार्य करते हुए आर्यसमाज सेवा समिति की ओर से इस आपदा में विधवा हुई बहन को जीविकापार्जन हेतु गौदान की गई तथा चारा भी दिलाया गया। गाय को सौंपते श्री विजेन्द्र आर्य, श्री रणधीर आर्य एवं सेवा समिति के सदस्य।

रिलाएंस फाउंडेशन की अध्यक्ष श्रीमती नीता अम्बानी को अमरकृति 'सत्यार्थ प्रकाश' भेंट

प्रभावित गांव में राहत कार्यों के दौरान निरीक्षण करने पहुंची रिलाएंस फाउंडेशन की अध्यक्ष श्रीमती नीता अम्बानी। इस अवसर पर सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने उन्हें सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया एवं इस क्षेत्र में शिक्षा के लिए कार्य करने हेतु उनका धन्यवाद किया।

भारतीय संस्कृति, साहित्य, इतिहास, वैदिक परम्पराओं आदि के सामान्य ज्ञान की लिखित परीक्षा 'ज्ञानोदय' का आयोजन

सर्वोत्तकर्ष सूचना एवं प्रौद्योगिकी संस्थान एवं आर्य समाज, नांगलराया, नई दिल्ली के संयुक्त सौजन्य से बालकों एवं युवाओं के मध्य से भारतीय संस्कृति, साहित्य, इतिहास, वैदिक परम्पराओं आदि के सामान्य ज्ञान के धूमिल होते संस्मरणों को पुनर्स्मरण कराने के उद्देश्य से एक लिखित परीक्षा 'ज्ञानोदय' का आयोजन 12 अक्तूबर 2013 प्रात: 10 बजे आर्य समाज, नांगलराया, इर्न दिल्ली के परिसर में किया जा रहा है। जिसमें पश्चिमी दिल्ली की प्रमुख शिक्षण संस्थानों में शिक्षा ले रहे अनेकों विद्यार्थियों एवं क्षेत्र के सामान्य युवाओं की रुचि का उत्साहजनक रुझान देखने को मिल रहा है। प्रतिभागियों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पानें वालों के लिए क्रमश: 1100/-, 700/- एवं 500/- रुपए के नकद पुरस्कारों के साथ-साथ स्मृति चिह्न तथा प्रशस्ति पत्र दिए जाएंगे। सभी प्रतिभागियों के लिए विशेष प्रोत्साहन पुरस्कार दिए जाएंगे।

- आजाद सिंह
अध्यक्ष, सर्वोत्तकर्ष सू. प्रौद्यो. संस्थान
+919650897544,
Email:sarvotkarsh@rediffmail.com,
sarvdeshikavd@gmail.com

'पुस्तकों से दोस्ती'

आर्यसमाज की सबसे मूल्यवान धरोहर अगर कोई है तो वह है उसका साहित्य। आर्यसमाज से सम्बन्धित साहित्य का परिचय आज की युवा पीढ़ी अवगत करवाना हमारी जिम्मेदारी बनती हैं। इस भाव से आर्यसन्देश में हर सप्ताह एक पुस्तक का संक्षिप्त परिचय छापा जायेगा, जिससे उस पुस्तक से युवा पीढ़ी परिचित हो सके।- ***विनय आर्य***

MAKERS OF ARYASAMAJ

अंग्रेजी पठित किसी भी युवक को आर्य समाज के महान धरोहरों से परिचित करवाने के लिये सबसे उत्तम पुस्तक डी.सी. शर्मा द्वारा लिखित MAKERS OF ARYASAMAJ है। इस पुस्तक का नवीन संस्करण हाल ही में प्रकाशित हुआ हैं। इस पुस्तक में स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पण्डित लेखराम, पण्डित गुरुदत्त एवं महात्मा हंसराज जी के जीवन का संक्षिप्त परिचय इस पुस्तक में दिया गया है।

मेरे विचार से किसी भी नवयुवक को भेंट करने के लिए सबसे उत्तम पुस्तक यही है जिससे आर्यसमाज की महान हस्तियों का परिचय हो सकता है। प्रकाशक- विजय कुमार गोविन्दराम हासानंद, 4408, नई सड़क, दिल्ली, 011-23977216,65360255

- डॉ. विवेक आर्य, समीक्षक

आर्यसमाज सेक्टर २० पंचकूला का वार्षिकोत्सव

१३ से १५ सितम्बर २०१३ तक तीन दिनों का आर्यसमाज सेक्टर २० पंचकूला का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ यज्ञ के ब्रह्मा होशंगाबाद मध्य प्रदेश के युवा विद्वान आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी थे। उन्होंने वेद मन्त्रों के आधार पर अलग अलग सत्रों में ईश्वर, कर्मफल व्यवस्था, गौमाता, यज्ञ व राष्ट्र जैसे विषयों की विस्तार से व्याख्या की।आचार्यजी ने आर्यसमाज के तथाकथित समन्वयवादी दृष्टिकोण पर प्रहार करते हुए कहा कि एक तरफ आर्यसमाज का सदस्य बने रहना और दूसरी तरफ उपासना के नाम पर मूर्तियों को पूजना, तो कहीं अन्यान्य पाखंडपूर्ण संस्थाओं से भी जुड़े रहना आर्यों के लिए अनुचित है जो पीछे के दरवाजे से हममें आ रहा है।भजनोपदेशक के रूप में श्री विजय भूषण आर्य जी ने सिद्धांतनिष्ठ मधुर भजनों से लोगों का मन मोह लिया।श्री नरेंद्र आहूजा विवेक जी का भी राष्ट्रविषयक व्याख्यान अंतिम दिन रखा गया था। प्रधान डॉ श्रीमती रजनी थरेजा जी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

- ओमप्रकाश गुगलानी, मंत्री

आर्यसमाज बाड़ी, धौलपुर (राज.) का

62वां वार्षिकोत्सव

समापन समारोह : 4 अक्तूबर, 2013
स्थान : अग्रवाल पंचायती धर्मशाला
प्रवचन-भजन : स्वामी केवलानन्द सरस्वती
कु. अंजली आर्या

- राकेश गर्ग, प्रधान

आर्यसमाज सूरजमल विहार द्वारा

गायत्री महायज्ञ

5 से 12 अक्तूबर, 2013
स्थान : शिव वाटिका, ए ब्लाक पार्क, सूरजमल विहार, दिल्ली
यज्ञ : प्रात: 7:30 से 9:30 बजे
ब्रह्मा : आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय
गायत्री जाप : श्री प्रहलाद शास्त्री एवं गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारी
यज्ञ पूर्णाहुति : 13 अक्तूबर, 2013
प्रवचन : आचार्य अशीष कुमार

- अशोक गुप्ता, प्रधान

निर्वाचन समाचार

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव (हरियाणा)

प्रधान : मा. सोमनाथ
मन्त्री : श्री बलदेव कृष्ण गुगलानी
कोषाध्यक्ष : श्री नरेन्द्र आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा, क्वीन्सलैंड (आस्ट्रेलिया)

प्रधान : श्री जितेन्द्र देव
मन्त्री : श्री हरी चन्द
कोषाध्यक्ष : श्री मूलचन्द

सार्वजनिक सूचना

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थाओं एवं आर्यसमाजी प्रतिष्ठानों के सम्बन्ध में जानकारियां एकत्र करने के लिए सभा की ओर से **श्रीमती मीनू बत्रा** को आउटसोर्सिंग की गई है। वे आपको मो. नं. **9650183335** से फोन करके जानकारियां देने के लिए निवेदन करेंगी। आपसे निवेदन है कि आप मांगी गई सूचनाएं उलब्ध कराने का कष्ट करें। प्राप्त सूचनाओं को सभा के आई.वी.आर. सिस्टम में जन-साधारण की जानकारी के लिए दर्ज किया जाएगा। सभा का आई.वी.आर. एस. नं. 011-23488888 है।

- विनय आर्य, महामन्त्री

आवश्यकता है

आर्यसमाज के धार्मिक कार्यक्रमों को टी.वी. पर प्रसारित करने हेतु **प्रबन्धक** की आवश्यकता है।

इसी के साथ सभा के वेद प्रचार विभाग के लिए **उपदेशक, प्रचारक एवं भजनोपदेशकों** की की भी आवश्यकता है। गुरुकुलीय पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को वरीयता दी जाएगी। इच्छुक उम्मीदवार अपना बायोडाटा भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
Email:aryasabha@yahoo.com

पृष्ठ 3 का शेष

श्राद्ध के माध्यम से मृतकों से तार जोड़ने या आत्माओं से सम्बन्ध जोड़े वाले अज्ञानियों को कौन बताए कि पुनर्जन्म तो होता है, विज्ञान भी मानता है। किन्तु यदि इन्हें आत्मा के स्वरूप और कर्मफल सिद्धान्त का सही-सही पता होता तो ये ऐसी बात नहीं करते। आत्मा का किसी से कोई रिश्ता नहीं होता, न आप हम उसे यहाँ से संचालित कर सकते हैं। प्रत्येक आत्मा अपने देह के माध्यम द्वारा किए कर्मों के अनुसार फल भोगता है और तदनुसार ही अगला जीवन पाता है । आत्मा को 'रिमोट ऑपरेशन' से 'कंट्रोल' करने की उनकी थ्योरी बचकानी, अतार्किक व भारतीय दर्शन तथा वैदिक वाङ्मय के विरुद्ध है।

अभिप्राय यह नहीं कि श्राद्ध गलत है या उसे नहीं करना चाहिए। वस्तुत: तो जीवन ही श्राद्धमय हो जाए तब भी गलत नहीं, अपितु बढ़िया ही है। वस्तुत: इस लेख का मूल अभिप्राय यह है कि श्राद्ध क्या है, क्यों इसका विधान किया गया, इसके करने का अर्थ क्या है, भावना क्या है आदि को जान कर इसे करें। श्राद्ध के नाम पर पाखण्ड व ढकोसला नहीं करें अपितु सच्ची श्रद्धा से कुल-परिवार व अपने पूर्वजों के प्रति, अपनी जातीय परम्परा के प्रति, माता-पिता- आचार्यों के प्रति, समाज के बुजुर्गों व वृद्धों के प्रति श्रद्धा की भावना से प्रेरित होकर अपने तन, मन, धन से तथा निस्स्वार्थ व कृतज्ञ भाव से जीवन जीना व उनके ऋण को अनुभव करते हुए पितृयज्ञ की भावना बनाए रखना ही सच्चा श्राद्ध है।

शोक समाचार

डॉ. अमर जीवन जी का निधन

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली के प्रधान पद को सुशोभित डॉ अमर जीवन जी का दिनांक 30 सितम्बर, 2013 को 82वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। वे रघुमल आर्य कन्या विद्यालय एवं आर्य पब्लिक स्कूल के प्रबंधक रहे। उन्होंने आर्यसमाज हनुमान रोड के नि:शुल्क औषधालय में सेवा के साथ आर्यसमाज जोरबाग में भी कई वर्षों तक सेवा की। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से लोधी रोड श्मशान घाटपर किया गया। इस अवसर पर सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

डॉ॰ अमर जीवन जी का जन्म 5 अप्रैल 1931 को पटियाला में हुआ था। डॉ॰ अमर जीवन के पिता श्री विद्यारत्न विद्यालंकार गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के प्रथम बैच के स्नातक थे जो स्वामी श्रद्धानन्द जी के सानिध्य में रहे हैं। डॉ॰ अमर जीवन के दादा लाला भगवान दास आर्यसमाज पटियाला के संस्थापक थे एवं आर्य सत्याग्रह में जेल गये। डॉ॰ अमर जीवन ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम.बी.बी.एस. की डिग्री लेकर पहले ई.एस.आई. में सेवा शुरु की फिर राष्ट्रपति भवन साउथ एवेन्यू के सी.जी.एस.एच. से सी.एम.ओ. सेवानिवृत हुए।

डॉ॰ अमर जीवन जी के छ: बहनें थीं जो प्रिंसिपल, डॉक्टर, प्रोफेसर आदि पदों पर रही हैं। वे अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी, दो पुत्र श्री संगम खन्ना एवं श्री आशुतोष तथा एक बेटी सम्भाविता का भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। डॉ॰ अमर जीवन जी की धर्मपत्नी रघुमल स्कूल की सेवा से सेवानिवृत होकर स्त्री आर्यसमाज हनुमान रोड की प्रधाना हैं। **उनकी स्मृति में शोक सभा बुधवार 9 अक्टूबर 2013 आयोजित की जाएगी।**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

प्रथम पृष्ठ का शेष

परिवारों की 30 कन्याओं के विवाह कराने में आर्यसमाज की ओर से सहयोग देने की घोषणा की। उन्होंने पुन: कहा कि इस आपदा में विधवा हुई यदि कोई बहन पुनर्विवाह करना चाहे तो आर्यसमाज इसके लिए आर्थिक एवं सामाजिक सहयोग प्रदान करेगा।

उन्होंने कहा कि आर्यसमाज आपके दु:ख में सहभागी है आपकी आवश्यकताओं की हर वस्तु को आर्यसमाज की ओर से देने का प्रयास किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि निराश्रित, अनाथ एवं पीड़ित परिवारों के बच्चों के लिए छात्रावास एवं विद्यालय का निर्माण कार्य अगले मास से आरम्भ हो जाएगा।

इन दिनों रिलाइंस फाउंडेशन की अध्यक्ष श्रीमती नीता अम्बानी भी उत्तराखण्ड दौरे पर गई हुई थी। महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने उनसे भी मुलाकात की और महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमूल्य कृति सत्यार्थ प्रकाश भेंट की।

पृष्ठ 5 का शेष

भाग लेने गए। मंच संचालन श्री जीवर्धन शास्त्री ने किया एवं यज्ञ के ब्रह्मा डॉ॰ सोमदव शास्त्री थे।

बामनिया में चल रहे एम॰डी॰एच॰ स्कूल के निर्माण कार्य व निरीक्षण करने गए दयानन्द सेवाश्रम के अधिकारी माता प्रेमलता, श्री धर्मपाल जी, श्री नरेन्द्र नारंग जी, जीवर्धन शास्त्री एवं जोगिन्द्र खट्टर ने आशा व्यक्त की कि 30/12/2013 तक निर्माण कार्य पूरा होकर नए वर्ष में विद्यालय का आरम्भ हो सकेगा, निरीक्षण स्थल पर श्री दिलीप सिंह भूरिया उपाध्यक्ष, भा॰ज॰पा॰ मध्यप्रदेश ने भी पहुँच कर दयानन्द सेवाश्रम एवं महाशय धर्मपाल जी का विद्यालय बनवाने पर आभार व्यक्त किया। मध्यप्रदेश के ही भामल जिला झाबुआ में भी एक नए विद्यालय के निर्माण का शिलान्यास माता प्रेमलता शास्त्री जी ने ग्रामवासियों की उपस्थिति में 7 सितम्बर को दयानन्द सेवाश्रम के दिल्ली से गये अधिकारियों के साथ मिलकर किया।-***जोगिन्द्र खट्टर, प्रभारी***

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा का

आर्य वीर प्रान्तीय महा सम्मेलन

12-13 अक्तूबर, शनिवार-रविवार, 2013

स्थान : अग्रवाल पब्लिक स्कूल, तिगाँव रोड, सेक्टर-3, बल्लबगढ़ (फरीदाबाद)

इस अवसर पर आचार्य बलदेव जी महाराज प्रधान सार्वदशिक सभा, डा॰ स्वामी देवव्रत सरस्वती प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्यवीर दल, आचार्य विजयपाल जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, डा॰ राम प्रकाश जी सांसद एवं कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, ब्र॰ राजसिंह आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, डा॰ धर्मवीर मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर, डा॰ राजेन्द्र विद्यालंकार मन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल, डा॰ सुरेन्द्र कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, डा॰ योगानन्द शास्त्री स्पीकर दिल्ली विधान सभा, श्री विनय आर्य महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, मदनमोहन आर्य उप संचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल, आचार्या दर्शना कन्या गुरुकुल खरल एवं अनेक विद्वान्, संन्यासी, राजनीतिक एवं सामाजिक नेताओं को आमन्त्रित किया गया है। कार्यक्रम इस प्रकार है-

12 अक्तूबर, 2013 (शनिवार)		13 अक्तूबर, 2013 (रविवार)	
संस्कृति रक्षा सम्मेलन:	प्रात: 10 बजे	सामूहिक शाखा	: प्रात: 6 बजे
ध्वजारोहण	: दोपहर 1 बजे	यज्ञ एवं प्रवचन	: प्रात: 8 बजे
शोभा यात्रा	: दोपहर 1:30 बजे	राष्ट्र रक्षा सम्मेलन	: प्रात: 10 बजे
आर्यवीर सम्मेलन	: रात्रि 8 बजे	व्यायाम प्रदर्शन	: दोपहर 1 बजे

सम्मेलन में हरियाणा के अतिरिक्त दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि स्थानों से भारी संख्या में आर्य वीर, वीरांगनाएं, आर्य भाई बहनें तथा गुरुकुलों के ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणियां पधारेंगे। अत: आप सभी से निवेदन है कि आप अपनी गरिमामयी उपस्थिति के साथ तन-मन-धन का सहयोग प्रदान करें। - ***वेद प्रकाश आर्य, मन्त्री***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का
वैदिक प्रकाशन विभाग
प्रकाशित वैदिक साहित्य पर भारी छूट

अनु.	साहित्य	मूल्य
1.	सत्यार्थ प्रकाश 18 भाषाओं में (सीडी)	30/-
2.	महर्षि दयानन्द के सम्पूर्ण ग्रन्थ (सीडी)	30/-
3.	शेख चिल्ली और लाल बुजक्कड (सीडी)	30/-
4.	पारिवारिक सुखशान्ति एवं समृद्धि के लिये यज्ञ करें (सीडी)	30/-
5.	गुरुदेव दयानन्द (सीडी)	30/-
6.	सत्य की राह (सीडी)	30/-
7.	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की 5 सी.डी. का सैट	100/-
8.	वैदिक विनय	150/-
9.	गुरुदत्त विद्यार्थी - हिन्दी / अंग्रेजी	80/-
10.	दयानन्द लघुग्रंथ सग्रंह	70/-
11.	उपनिषदों की कहानियाँ	60/-
12.	शगुन लिफाफा सिक्केवाला	400/- सैंकड़ा
13.	शगुन लिफाफा बिना सिक्केवाला	300/- सैंकड़ा
13.	नैतिक शिक्षा एवं व्यवहार कुशलता	200/-
14.	नेम स्लिप (1×21)	10/-
15.	समस्त कॉमिक्स	25 से 35/-
16.	अनुपम दिनचर्या एवं गीताञ्जलि	50/-
17.	वेद भाष्य (घूड़मल प्रकाशन)	5000/-
19.	सत्यार्थ प्रकाश (अजिल्द)	40/-
	सत्यार्थ प्रकाश (सजिल्द)	80/-
	सत्यार्थ प्रकाश (स्थूलाक्षर)	150/-

सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य पर 20 % छूट।

अन्य प्रकाशनों के साहित्य पर 10% की छूट।

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्यसमाज के गीतों को बनाएं अपनी मोबाइल ट्यून (CallerTunes)

आर्यसमाज के गीतों को अपनी मोबाइल ट्यून बनाने के लिए आज ही डाउनलॉड करें और अन्य महानुभावों को भी प्रेरित करें।

Sr.	Song Title	Voda	Idea	Airtel	Tata CDMA	Tata Doco	BSNL (North)	MTS
1	आई फौज दयानन्द वाली	10444132	720080	543211007382	376609	254930	173340	77772509
2	ये प्रभु हम तुम से	10444133	720084	543211007383	376614	254931	173341	77772510
3	होता है सारे देश का	10444134	720081	543211007384	376615	254932	173342	77772511
4	हम को सब दुनिया जाने	10444135	720082	543211007385	376616	254933	173343	
5	जो होली सो होली	10444136	720090	543211007386	376622	254934	173344	77772512
6	पूजनीय प्रभु हमारे	10444137	720105	543211007387	376629	255260	173345	77772513
7	सुनो-सुनो ये दुनिया वालो	10444138	720115	543211007388	376639	254935	173346	77772514
8	यूँ तो कितने ही महापुरुष	10444139	720111	543211007389	376644	254936	173347	77772515
9	दिल्ली चलो (सम्मेलन गीत)			543211462723			1721306	

Voda- SMS "CT code"send to 56789 Idea- SMS "DT Code"send to 55456 Airtel- Dial Code and Say " YES" Tata cdma- SMS "Wtcode" send to 12800 Tata docomo- SMS "CT code" to 543211 BSNL- SMS "BT code" send to 56700 MTS- SMS "CT code" send to55777

उदाहरण के तौर पर आपके पास Idea का कनेक्शन है और आप "Aai Fauj Dayaanand Wali" गीत की धुन अपने Idea मोबाईल पर कॉलर ट्यून बनाना चाहते हैं, तो आप गीत के DT 720080 को टाईप कर इस नंबर 55456 पर एसएमएस करें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 30 सितम्बर, 2013 से रविवार 6 अक्तूबर, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 03/04 अक्तूबर, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: गुरुवार 3 अक्तूबर, 2013

मॉरीशस में आर्यसमाज की स्थापना के दस वर्ष बाद मॉरीशस पहुंचने वाले डॉ. चिरंजीवी भारद्वाज के आगमन के 100 वर्ष पूर्ण होने पर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मॉरीशस

5 से 8 दिसम्बर, 2013

स्थान : श्रीमती एल. पी. गोविनरामेन वैदिक केन्द्र युन्यन वेल, त्रुआ बुतिक

विषय : भारतेतर देशों में भारतीय धर्मोपदेशकों का आर्यसमाज के मन्तव्यों के प्रचार प्रसार में योगदान। अधिक जानकारी/भाग लेने के लिए सम्पर्क करें –

हरिदेव रामधनी, महामन्त्री

आर्य सभा मॉरीशस, E-MAIL: ARYAMU@INTNET.MU

प्रतिष्ठा में,

दयानन्द मठ, दीनानगर की स्थापना के 75 वर्ष पूर्ण होने पर

हीरक जयन्ती समारोह : 18–20 अक्तूबर,13

समारोह के मुख्य आकर्षण

ध्यान एवं योग साधना, ध्वजारोहण, वेद सम्मेलन, संस्कृत एवं संस्कृति सम्मेलन, स्त्री सम्मेलन, युवा सम्मेलन, शोभा यात्रा, संध्या यज्ञ भजन एवं प्रवचन, संगीतमय आर्य सिद्धान्त सम्मेलन, एवं आर्य महासम्मेलन।

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधाकर समारोह को सफल बनाएं

निवेदक : स्वामी सदानन्द सरस्वती, अध्यक्ष, मो. 9478256272

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

वैदिक विनय

मात्र 125/– रुपये

प्राप्ति हेतु संपर्क करें।

–: प्राप्ति स्थान : –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

अपना सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में करके हिन्दी राष्ट्रभाषा बनाने में सहयोगी बनें।

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/–रु. सैकड़ा	मात्र 300/–रु. सैकड़ा

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी-किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 21 स्लिप्स का एक सैट मात्र 10/– रुपये प्रति शीट।

प्राप्ति हेतु संपर्क करें।

–: प्राप्त स्थान : –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर